'नकाशीदार केबिनेट'
सुधा ओम ढीगरा
शिवना प्रकाशन
सीहोर, म.प्र.
मूल्य : 150 रुपए

# नक्काशियों से झांकती चोट

## अमिय बिन्दु

हमारे भीतर भूतकाल किसी न किसी रूप में हमेशा जिन्दा रहता है। हम कितने ही ज्ञानी हो जाएं, कितना भी पढ़ लिख जाएं हम कुछ चीजें भूलने के नाम पर भी नहीं भुला सकते। चेतन रूप में मनुष्य अपने को कहीं न कहीं उलझाए रखता है। लेकिन रात के स्वप्न पर उसका कोई बस नहीं चलता। कभी किसी घटना या दुर्घटना के चलते अवचेतन इतना हावी हो जाता है कि हम अपने को रोक नहीं पाते और हमारा भूतकाल हमारे ही भीतर के अंधेरों से बह निकलता है। हम कहीं भी चले जाएं हम चेतना का वही रूप होते हैं। हमारे दिमाग में बचपन के सपने, बचपन की इच्छाएं और बचपन की यादें तक जिन्दा रहती हैं। उन्हें किसी उपजाऊ जमीन की जरूरत भर होती है और फिर वह चीटियों की तरह एक पंक्ति में बिना रुके निकलने लग जाती हैं। अपने वतन भारत से सुदूर अमेरिका में रहते हुए संपदा भी ऐसी ही जीती जागती इंसानी मूरत थीं जो वहां आए टॉरनेडो तूफान के बरक्स अपना घर बचाते हुए लकड़ी की एक नक्काशीदार कैबिनेट को सहेजने की कोशिश में लगती हैं और उसके सहारे धीरे-धीरे भूतकाल में उतरती चली जाती हैं। 'नक्काशीदार केबिनेट' के नाम से प्रकाशित सुधा ओम ढींगरा का नया उपन्यास बड़े करीने से पंजाब के एक गांव में रहने वाली सोनल नाम की लड़की की कहानी कहता है। डॉ. सम्पदा उपन्यास की सूत्रधार के रूप में प्रवासी भारतीय समुदाय का प्रतिनिधित्व करती हैं और वे सोनल की कहानी को आगे बढ़ाने का माध्यम भी बनती हैं।

इस तरह एक कथा होते हुए भी उपन्यास कई स्तरों पर आगे बढ़ता है। पहले अध्याय में लगता है सम्पदा की अपनी कहानी है जो अपने देश से इतनी दूर अमेरिका में एक तूफान से जूझ रही हैं। लकड़ी का बना हुआ नक्काशीदार केबिनेट जिसे पानी से बचाने के लिए वे जद्दोजहद करती हैं कई राज छुपाए लगता है। उपन्यास की शुरूआत आने वाले तूफान के भय भरे वातावरण की निर्मिति से शुरू होता है। यह तूफान वास्तविक तूफान से बढ़कर सम्पदा के मानस जगत् में आने वाले तूफान को रेखांकित करता है- 'उस दिन वातावरण में घबराहट थी। तनाव था। बेचैनी थी। सड़कों पर कारें तेजी से भाग रही थीं। शहर के सारे ग्रोसरी स्टोर खाली हो चुके थे। लोगों ने खाने-पीने की वस्तुओं से घर भर लिए थे। एक अनजाना भय सबके भीतर बैठ चुका था। किसी को पता नहीं था क्या होने वाला है और क्या-क्या उन्हें भुगतना पड़ेगा? सोचकर ही लोग परेशान थे।' यह बात ज्यों की त्यों उपन्यास की कथा में आगे बढ़ती जाती है और जैसे-जैसे तूफान और उससे होने वाले नुकसान का समाचार मिलता जाता है वैसे-वैसे उपन्यास का कथानक गम्भीर होता जाता है। पाठक कुतूहल के साथ सजग हो जाता है कि कुछ होने वाला है।

सम्पदा और सार्थक दम्पत्ति को कुछ नहीं होता लेकिन इस बहाने से अमेरिका में रहने वाले भारतीयों की मनःस्थिति, उनकी सामाजिक स्थिति, दोनों देशों की मानसिक अवस्थाओं में अंतर, बच्चों के पालन-पोषण और उनसे रहने वाली अपेक्षाओं में अंतर की बात उघड़ती चली जाती है। इस रूप

लोगों के बीच कितना प्रिय हो चुका था।

कथानक के अतिरिक्त परिदृश्यों के सजीव वर्णन, भाषा के विविधतापूर्ण व्यवहार तथा यथासमय शब्दों के सही संयोजन ने उपन्यास को रोचक और पठनीय बना दिया है। दूसरे अध्याय में कहानी की दिशा की झलक मिलने लगती है लेकिन पाठक अंत तक जुड़ा रहता है। कहानी के बीच-बीच में पिरोए गए ऐतिहासिक और सामाजिक घटनाओं से उसकी उत्कंठा और भी बढ़ जाती है। ध्यान देने की बात है कि पंजाब के गांवों और खालिस्तानी आंदोलन के समय की कुछ बातें और स्थितियों की झलक इतनी जीवंत हैं कि उससे एक कालगत धारणा बनाई जा सकती है। उपन्यासकार ने जिस तरह से नायिका की कथा के साथ अन्य सामयिक घटनाओं को जोड़ा है वह काबिले तारीफ है। उपन्यास का शीर्षक पाठकों का कौतूहल बनाए रखने में समर्थ तो रहता ही साथ ही अपनी सार्थकता प्रकट करता है। नक्काशी बाहर से दिखने में बड़ी खूबसूरत लगती है और लोगों का मन मोह लेती है लेकिन उसके लिए लकड़ी को कितने चोट सहने पड़ते हैं यह उस लकड़ी के सिवाय किसी को नहीं पता। सोनल जितनी सुदृढ़, स्पष्ट और चहकती हुई सम्पदा को मिली थी, उसका भूतकाल उससे बिल्कुल ही उलट था। कितनी चोटों के बाद उसने जीना सीख लिया था और दूसरे लोगों के लिए सुख का कारण बन चुकी थी।

कहन की शैली और भाषागत सौन्दर्य की बात करें तो भी उपन्यास ने सबके साथ न्याय ही नहीं किया है बल्कि सभी बातों को अच्छे से निबाहा है। मुख्य कथा निर्बाध हिंदी में चलती रहती है लेकिन जब कथानक में कभी पंजाब के गांव से कोई बुजुर्ग आता है तो उसका वार्तालाप पंजाबी में होने लगता है और जब अमेरिका में वही पंजाबी मिलता है तो कुछ अंग्रेजी के शब्दों की छौंक भी लगा देता है। सभी पात्रों की भाषा देशगत, कालगत और परिस्थितिगत स्थितियों में उपयुक्त और रोचक बनी रहती है। पाठकीय रोचकता भी शुरूआत से अंत तक बनी रहती है हालांकि पाठकों को यह अंदाजा हो जाता है कि उपन्यास का अंत किस ओर अग्रसर है परन्तु घटनाओं का रोचक विवरण, भारत और अमेरिका दोनों देशों में अंतरण आदि कुछ बातें उसे बोनस के रूप में अतिरिक्त आनंद देती हैं। उपन्यास का आरम्भ किसी जासूसी उपन्यास की तरह होता है और एकबारगी लगता है कि नक्काशीदार केबिनेट का दरवाजा खुलते ही कोई जादुई चीज बाहर निकलेगी और हर तरफ हंगामा मच जाएगा परन्तु कुछ सजावटी चीजें गिरने के बाद एक डायरी निकलती है। वह डायरी भी कम जादुई नहीं होती। उसके पन्नों पर सवार होकर पाठक कब अचानक अमेरिका से पंजाब पहुंच जाता है उसे पता ही नहीं चलता।

यह दो सभ्यताओं, दो देशों या दो संस्कृतियों के तालमेल, संघर्ष या द्वंद्व की कहानी नहीं है मगर मनुष्य के आंतरिक और बाहरी चरित्रों के द्वंद्व की कहानी जरूर है। साधारण सी लकड़ी को नक्काशीदार केबिनेट में भी ढाला जा सकता है या फिर जलाकर ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है या फिर यूं ही जंगल में सड़ने के लिए छोड़ा जा सकता है यह बात मीनल, सोनल, मंगल, बलदेव, सुक्खी आदि के जीवन से स्पष्ट होता चलता है। जैसे उपन्यास के शुरूआत में कुछ भारतीय और अमेरिकी व्यवहारों की चर्चा है वैसे ही आखिर में भी वैसी बातें होती रहती हैं जबकि सम्पदा कहती हैं, 'सा. र्थक इस देश के अनुशासन, यहां की व्यवस्था और लोगों के सेवाभाव से बहुत प्रभावित हैं। इस देश का अच्छा-बुरा सब समझते हैं। हालांकि यह बात नहीं कि यहां बुरे लोग नहीं, जो बुरे हैं, बहुत बुरे हैं। पर वे भी सड़कों पर लघुशंका का निवारण नहीं कर सकते। सड़कों पर थूक नहीं सकते। कत्ल, बलात्कार करके छूट नहीं सकते...।'

देश से बाहर रहते हुए हिंदी और देश की यादों को संजोए रखना और उसे लगातार कथानकों में पिरोकर प्रस्तुत करना वाकई काबिलेतारीफ है। लेकिन केवल इसीलिए नहीं बल्कि एक रोचक और ज्यादा से ज्यादा दो बैठकों में समाप्त किए जाने लायक सार्थक उपन्यास के लिए भी लेखिका को बधाई दी जानी चाहिए। हिंदी उपन्यासों के जद में यह उपन्यास अपनी प्रासंगिकता, स्त्री संघर्ष के विवरणों और एक विशेष कालखंड के पंजाब की घटनाओं से रूबरू करवाने के लिए याद किया जाएगा।

❖❖❖

8 बी/2, एन पी एल कॉलोनी
न्यू राजेंद्र नगर, नई दिल्ली -110060
मो. : 9311841337

में पहले ही सोपान पर यह उपन्यास झलक दिखलाने लगता है कि इसकी कथा में दो सभ्यताओं, दो संस्कृतियों या कि दो विचारों का सम्मिलन है। जैसा कि सलमान रुश्दी बाहर जा बसे भारतीयों के बारे में कहते हैं कि कभी-कभी ऐसे लोगों को लगता है कि वे दो-दो सभ्यताओं की सवारी कर रहे हैं और कभी तो लगता है कि चक्की के दो पाटों के बीच पिस गए हैं। जो भी हो, विस्थापन का सबसे अधिक दर्द महिलाओं ने झेला है। बिना किसी प्राकृतिक या मानवीय आपदा के भी मायके से ससुराल का सफर किसी विस्थापन से कम नहीं होता। वे न तो पूरी तरह मायके से कट पाती हैं और न ही पूरी की पूरी ससुराल की हो पाती हैं। शायद समाज उनसे ऐसी आशा भी नहीं करता। क्योंकि जो समाज चाहता है कि वह एकमात्र अपने पति की होकर रह जाएं, यदि उनके माता-पिता को कोई सहारा नहीं मिलता तो वही समाज यह भी अपेक्षा करता है कि बेटी अपने मां-बाप को भी संभाले।

ऐसी ही अपेक्षाओं और वास्तविकताओं से उलझते हुए सम्पदा भी बात-बात में इशारा करती हैं कि हम भारतीय अमे. रिका जैसे देशों में आकर न तो पूरे अमेरिकी बन पाते हैं और न पूरे भारतीय रह जाते हैं- 'हम भारतीयों की यही त्रासदी है, विदेश में आकर भी विदेशियों की तरह जी नहीं पाते। व्यवसाय कोई भी हो, काम उनकी तरह ही करते हैं, सच तो यह है कि उनसे भी ज्यादा करते हैं।' वह यह भी कहती है कि भारतीय विदेशों में कुछ मूल्य उनके अपना तो लेते हैं मगर अपने मूल्यों और सामाजिक अपेक्षाओं से नाता नहीं तोड़ पाते। ऐसे भारतीय अपने बच्चों को स्वतंत्रता के मूल्य की शिक्षा देते हैं और उम्र बढ़ने के साथ-साथ उनकी चिंता भी करने लग जाते हैं, उनसे अपेक्षाएं बढ़ाते जाते हैं, जबकि 'अमेरिकन पेरेंट्स भारतीयों की तरह बच्चों को बुढ़ापे का सहारा नहीं समझते, अपनी जिन्दगी को भरपूर जीते हैं और बच्चों को भी उनकी इच्छानुसार जीने का समय और अवसर देते हैं।'

तूफान में सम्पदा और सार्थक के घर में पानी घुस जाता है, वे चीजों को सहेजने की कोशिश करते हैं जब उनकी नजर उस नक्काशीदार कैबिनेट पर पड़ती है। सम्पदा को उसे बचाने की चिंता होती है क्योंकि वह किसी की निशानी है और फिर धीरे-धीरे कैबिनेट के रहस्य से परदा उठता है और ऐसा लगता है मानो किसी घायल लड़की ने वह कैबिनेट सम्पदा को उपहार में दिया था और उसके साथ ही अपनी लिखी हुई डायरी भी दी थी। जिसमें उसने अपने जीवन का संघर्ष दर्ज किया था। इसी लड़की का नाम सोनल था। यहां से आगे उपन्यास में सोनल की कहानी चलती है जो मूलत: पंजाब की रहने वाली थी। डायरी के पन्ने पलटते हुए सम्पदा, सोनल की कहानी में प्रवेश करती है और उपन्यास में दूसरे सूत्रधार सोनल का प्रवेश हो जाता है जो डायरी के माध्यम से अपनी कहानी बतलाती है। पंजाब के गांव में रहने वाली सोनल के परिवार में उसकी छोटी बहन मीनल, शराबी और ऐय्याश चाचा मंगल और दुष्ट चाची मंगला थी। पंजाब के गांवों की स्थिति और सोनल के परिवार की बेरहमी धीरे-धीरे उजागर होती है और रिश्तों को कलंकित करने जैसे वारदातों के बाद अंतत: मीनल मारी जाती है और सोनल का विवाह अमेरिका में रहने वाले पंजाबी लड़के बलदेव से हो जाता है।

बलदेव से सोनल का विवाह उसके गांव और परिवार की साजिश तथा चालाकी का परिणाम था। उसे उसका अपना प्यार भी नहीं मिल पाता जो अंतत: पुलिस ऑफिसर बन जाता है। बलदेव ने सोनल से विवाह सम्पत्ति के लालच में किया था और उसका असली धंधा वेश्यावृत्ति और ड्रग्स का था और वह सोनल से भी वही करवाने वाला था। उसमें पति या परिवार जैसी कोई संवेदना ही नहीं थी। उसके चरित्र का पता उसकी बातों से चलता है जब वह अपने परिवार वालों से कहता है कि 'पहले इसका विश्वास जीतो। उसके नाने को वादा किया है, कागजों पर उसके साइन करवा के दूंगा और बदले में उसके घर में पड़े हीरे मेरे होंगे। मुझे हीरे चाहिए। फिर हम सब इकट्ठे उसे नोच खाएंगे।'

डायरी में सोनल की कहानी वहीं खत्म होती है। जिसके बाद उसकी मुलाकात डॉ. सम्पदा से अमेरिका में ही किसी संगठन के सामाजिक कार्यों के दौरान हुई थी। सोनल जीवन में सामने आई परिस्थितयों से हारती नहीं और न ही कहीं समझौता करती है। वह हताश होकर लौटकर अपने वतन भी नहीं जाती बल्कि यहीं अमेरिका में रहते हुए बलदेव को पकड़वाती है। अपने वतन के लोगों की सहायता करती है। उसने अपना उद्देश्य बना लिया था कि जो भी ऐसी लड़की किसी के चंगुल में फंसकर विदेश में असहाय होगी उसकी सहायता करेगी। इस तरह उपन्यास अंत में बहुत ही आदर्शवादी और आशावादी स्थिति में समाप्त होता है।

उपन्यास में टॉरनेडो तूफान के चित्रण का महत्व इस बात में है कि जब तक तूफान चलता रहता है उसकी पृष्ठभूमि में सोनल और एक तरह से पूरा पंजाब तूफान में घिरे हुए दिखते हैं। पंजाब के गांव के माध्यम से उपन्यास की कहानी 80 के दशक के पंजाब के इतिहास का दस्तावेज बनने लगती है। इस कालखंड में पंजाब में फैली नशाखोरी, आतंकवाद और खालिस्तानी आंदोलनों के जिक्र के साथ ही इंदिरा गांधी की हत्या और उससे उपजे हालातों के दृश्य भी यदाकदा दिखलाई पड़ते हैं। उपन्यास में पाश की एक पूरी कविता भी आती है, जिसे खालिस्तानी आतताईयों ने गोली मार दी थी। उस दिन के घटनाक्रमों का भी जिक्र है जिस दिन पाश को गोली मारी गई थी। इस बहाने से पंजाब के लोगों की प्रतिक्रिया की एक झलक भी मिलती है कि इतने कम उम्र में एक साहित्यकार